चारुदत्त का चरित्र चित्रण

Name :- Sovi Kumari
class :- B.A II year
Deptt :- Sanskrit

महाकवि शूद्रक विरचित 'मृच्छकटिकम्' संस्कृत साहित्य का अत्यन्त सुन्दर एवं उत्कृष्ट प्रकरण है। जिसमें कवि का चरित्र-चित्रण मानव समाज के स्वभाव से उनके गम्भीर, सूक्ष्म और मनोवैज्ञानिक ज्ञान का परिचायक है।

—चारुदत्त इस प्रकरण का मुख्य नायक है। यह धीरप्रशान्त नामक नायक के कोटि में आता है। चारुदत्त में सामान्य नायक के सभी गुण विद्यमान हैं, यह अभिजात कुलोत्पन्न एक युवा ब्राह्मण है। अपने ब्राह्मणत्व के प्रति सर्वथा सतर्क रहते हुए भी वह कर्मणा सार्थवाह है। इसके पूर्वज व्यापारी थे अतः ~~वह~~ पूर्वजों से इसके पास अपार धन सम्पत्ति थी। अपनी अतिशय उदारता और दानशीलता के कारण वह अपनी सभी सम्पत्ति निर्धनों को दे देता है और दरिद्र हो जाता है। इस अवस्था में भी अपने दान, दया, परोपकार, उदारता और प्रियवादिता आदि गुणों के कारण नगर प्रियदर्शन वासियों का श्रद्धा-भाजन बना हुआ है—

सोऽस्मद्विधानां प्रणयैः कृशीकृतो
न तेन कश्चिद्विभवैर्विमानितः।
निदाघकालेष्विव सोदको ह्रदो
नृणां स तृष्णामपनीय शुष्कवान्॥

अत्यन्त लोकप्रिय है चारुदत्त, न्यायाधीश से लेकर चण्डाल पर्यन्त तथा विट-चेट सभी इसके प्रति आदर तथा प्रेम रखते हैं।

—चारुदत्त अत्यन्त उदार और दयालु है। जब कोई श्लाघनीय कार्य करता है या इसे शुभ समाचार

सुनाता है तो वह उसे कुछ न कुछ पुरस्कार
देता है। अपनी अतिशय उदारता के कारण ही वह शर्विलक
के आभूषण चुराने पर भी प्रसन्नता का अनुभव करता है। [illegible]
वह कहता है और ही सुखी उसे विफल होकर घर से खाली हाथ नहीं जाना पड़ा। इस
कर्णपूरक को अपना दुशाला पुरस्कार स्वरूप दे देता है। इस
उदारता के कारण वसन्तसेना उससे प्रेम करती है। सेवकों के
प्रति भी दयालु है इसी कारण वह सोई हुई रदनिका को
जगाना नहीं चाहता —— 'अलं सुप्तजनं प्रबोधयितुम्'
पशुपक्षियों के प्रति भी उसकी 'करुणा' प्रकट होती है। अपनी
उदारता के कारण ही वह दरिद्रता को मृत्यु से भी अधिक कष्टदायक
समझता है ——

> एतत्तु मां दहति यद्गृहमस्मदीयं,
> क्षीणार्थमित्यतिथयः परिवर्जयन्ति।
> संशुष्कसान्द्रमदलेखमिव भ्रमन्तः
> कालात्यये मधुकराः करिणः कपोलम्॥

चारुदत्त अपराधी के प्रति भी क्रोध व्यक्त नहीं करता और
शरणागत की रक्षा करता है। जिस समय शकार उसे मरणान्तिक
वैर की धमकी देता है तब वह 'अशौण्डीर्य' इतना मात्र कहकर
छोड़ देता है। जब वह चारुदत्त पर मिथ्याभियोग लगाता है तब
भी चारुदत्त क्रुद्ध नहीं होता, न ही विचलित होता है। शरण में
आये हुए आर्यक से कहता है —— 'अपि प्राणानहं जह्यां न तु
शरणागतम्'। उसकी यह उदारता उस समय चरमसीमा पर
पहुँच जाती है जब शरणागत शकार को अभयदान देकर क्षमा
कर देता है।

चारुदत्त को अपनी प्रतिष्ठा और चरित्र की सदैव
उज्ज्वलता का सदा ध्यान रहता है। इसी कारण वह वसन्तसेना
के आभूषण चोरी हो जाने पर मूर्च्छित हो जाता है और नाना
प्रकार की चिन्ता व्यक्त करता है। अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा के
लिए ही वह वसन्तसेना की धरोहर को लौटाना आवश्यक
समझता है और असत्य बात कहकर बहुमूल्य रत्नमाला
बदले में भेजता है। मृत्युदण्ड पाने पर भी उसे भय नहीं है

केवल दुःख है तो प्रतिष्ठा-वाले भाग का ही -

'न चिन्तये मरणमहं दिवसं केवलं दूषितं यशः।
विशुद्धस्य हि मे मृत्युः पुत्रजन्मसमो भवेत् ॥'

गणिका से प्रेम करते हुए भी चारुदत्त में चारित्रिक दृढ़ता है। वह अपनी पत्नी धूता से प्रेम करता है और उसे पवित्र मानता हुआ उसका आदर करता है। अपनी पतिव्रता स्त्री पर वह गर्व करता है और गार्हस्थ्य धर्म का पूर्णतया पालन करता है।

चारुदत्त कला-प्रिय व्यक्ति है। वह रेभिल के संगीत की ताल-लय तथा मूर्च्छना इत्यादि का विश्लेषण करते हुए सराहना करता है। शर्विलक की लगाई सेंध को देखकर भी उसकी कलात्मकता की प्रशंसा करता है। वह धार्मिक प्रवृत्ति का व्यक्ति है। सन्ध्यावन्दनादि नित्य कर्मों का नियमपूर्वक अनुष्ठान करता है।

इस प्रकार हम निष्कर्ष के रूप में कह सकते हैं कि चारुदत्त प्रियदर्शन, लोकप्रिय, उदार, दानी-दयालु, दृढ़-चरित्र वाला, कलाप्रिय और धार्मिक प्रकृति का नायक है। नायक के सभी गुण उसमें विद्यमान हैं।

मृच्छकटिकम्

Name :- Soni Kumari
class :- B.A II year
Deptt :- Sanskrit

श्लोक सं. 6 :- अवन्तिपुर्यां द्विजसार्थवाहो युवा दरिद्रः किल चारुदत्तः। गुणानुरक्ता गणिका च यस्य वसन्तशोभेव वसन्तसेना॥6

प्रस्तुत श्लोक से महाकवि शूद्रक मृच्छकटिकम् के कथावस्तु का प्रारम्भ करते हैं :—

अर्थ — उज्जयिनी में (पहले) ब्राह्मण - व्यापारी किन्तु (बाद में) दरिद्र युवक चारुदत्त (रहता था) और वसन्त (ऋतु) की सुन्दरता जैसी (रमणीय) 'वसन्तसेना' नामक वेश्या (चारुदत्त) के गुणों के कारण (उससे) प्रेम करती थी।

व्याख्या। — उज्जयिनी नगरी में चारुदत्त नाम का ब्राह्मण व्यापारी जो अपने दानशीलता के कारण बाद में दरिद्र बन जाता है, निवास करता था और उसी नगरी में वसन्त ऋतु के समान अत्यन्त सुन्दर, मनोहरी, मनमोहक, अत्यन्त प्रसिद्ध छविमयी वसन्तसेना नामक गणिका (वेश्या) चारुदत्त के गुणों पर अत्यन्त से आकर्षित थी और उससे प्रेम करती थी।

महाकवि शूद्रक ने इस नाटक चारुदत्त एवं वसन्तसेना के प्रेम का बड़ा ही सुन्दर निदर्शन प्रस्तुत किया है।

व्याकरण। — प्रस्तुत श्लोक में उपेन्द्रवज्रा छन्द एवं उपमा अलंकार है।

समास — द्विजसार्थवाह — द्विजश्चासौ सार्थवाहश्चेति द्विजसार्थवाहो।